

# श्रीस्वामी हरिदासजी का स्वरूप वर्णन

सुन्दर रज तिलक भाल, बाँकी भृकुटी बिसाल, रतनारे नैन नेह भरे दरस पाऊँ।  
वारों छवि चंद वदन, सोभा सुख सिंधु सदन, नासावर कीर कोटि काम को लजाऊँ॥  
अधर अरुन दसन पाँति, कुंदकलिका बिसाँति, कमल कोस आनन दृग मधुप लै बसाऊँ॥  
मधुर वचन मंद हास, होत चाँदनी प्रकास, जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत गुन गाऊँ॥

कंबु कंठ मंजु दाम, गौर अंग छवि सुधाम, कुंदन तें सरस मृदुल मोहन मन-भायौ।  
नाल सहित कंज पान देत सदा अभय दान, तजिकें अभिमान साह अकबर सिर नायौ॥  
चरन - कमल कामधेनु, सकल कामना सुदेनु, दरसैं दृग होत चैन आपदा भगायौ।  
करवा गूदरा पास, वृन्दावन करें बास, जै जै श्री हरिदास रसिक भगवत अपनायौ॥

कुंजबिहारी एक आस, और सकल तजि निरास, असन बसन तें उदास बाँके ब्रतधारी।  
गान दयागुन निधान, रसिक मुकुटमनि-प्रधान, राग-भोग बखत जानि तोषत पिय प्यारी॥  
तिमिर - हरन कौं दिनेस, ताप - हरन कौं निसेस, पाप - दहन पावकेस गुरुता मुखचारी।  
निधिवन आसीन नित, वर बिहार सरस चित्त, जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत बलिहारी॥

कूंची नित्यविहार की; श्रीहरिदासी हाथ।  
सेवत साधक सिद्ध सब, जाँचत नावत माथ॥

सुजस सदा हरिदास कौ, श्रवन होइ कै गान।  
ताकों प्यारी लालजू, बिहँसि देहिँ सिर पान॥

श्रीवृन्दावन दंपति, जो चाहै रस-रीति।  
श्री स्वामी हरिदासके, चरनन सों करि प्रीति॥

\*\*\*\*\*

website : [www.bankeybihari.info](http://www.bankeybihari.info) & [www.brajdarshan.info](http://www.brajdarshan.info)

Phone : +91-9897919717 , 9897233358

\*\*\*\*\*